Perspectives in Higher Education

ABOUT THE BOOK

Higher Education for sustainable development and economic livelihood is the main objective of any higher education. These objectives have been furnished by NEP 2020 which opened a gateway for the students to have new dreams and opportunities. Experiential learning, integrated and joyful learning, holistic development and technology integrated learning provide a scenario for innovations in teaching and learning. This new wave of educational transformations has been created a flexible learning environment and education as more democratic sense. By availing quality higher education an individual to develop qualities and competencies which enable them to meet the global needs. This book provides an opportunity to identify the perspectives in higher education, knowledge creation and innovation and is more useful for scholars and students who thrive for new perspectives in higher education.

ABOUT THE EDITORS

Dr. Ramesh. M is presently working as an Assistant Professor of Education at Indira Gandhi National Tribal University Amarkantak, Madhya Pradesh. He did M.Sc. (Botany), M.Ed., UGC-NET, and Ph.D. (Education) from the Centre of Advanced Study in Education [CASE], The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara. He worked as UGC Post-Doctoral Fellow at Pondicherry University. He is having more than eight years of experience in Research and teaching. His area of specialization are Science Education, Teacher Education, Inclusive Education and Environmental Education. He has published 22 research articles in National and International journals, 7 chapters in edited books, and 47 papers presented in National and International seminars/conferences. He served as a resource person for the seminars, workshops, and module development. He completed 03 research projects funded by ICSSR, PMMMNMTT, Central University of Kerala, and NCERT.

Dr. Maria Josephine Arokia Marie. S. presently is working as Assistant Professor of Education at Indira Gandhi National Tribal University Amarkantak, Madhya Pradesh. She did M.Sc. (Chemistry), M.Phil. (Chemistry), M.Ed., Ph.D. (Education), UGC-NET, and SRF, and has more than seven years of experience in Research and teaching Science Education, Teacher Education, Educational Technology, Blended Learning, and Educational Psychology. To her credit, she has published 21 research articles in National and International reputed journals, Scopus indexed and UGC Care listed journals. She contributed her research papers as chapters in many books. She has organized 2 National seminars and completed ICSSR-IMPRESS Major project and one project from Rajya Siksha Kendra, Bhopal. Under her guidence 1 Phd awarded and 2 are going. She is a member of various Academic bodies and a reviewer for research journals. Her aspirant tentacles try to reach even far-flung areas to promote education and developmental activities to scale new peaks in social development.

Prof. M.T.V. NAGARAJU is currently working as Dean, Faculty of Education, Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak (MP), India. He has published 35 books, 46 research publications in National and International journals apart that he has presented papers in 11 International and 52 National Seminars/Conferences. Under his research supervision 17 M.Phil. and 6 Ph.D. Degrees in Education were awarded and currently guiding 4 Ph.D. Scholars. He has completed 2 minor and 3 major projects. He is a Life Member of the Indian Association of Teacher Educators (IATE) and a Life Member of the Indian Association of Applied Psychologists (IAAP). He has delivered several extension lectures and enlightened the participants.

Manglam Publications
K-129, Gali No. 3, 3½ Pustha Main Road,
Near Shiv Om Jewellers, Gautam Vihar, Delhi-110053
Mob. : +91 9811477588, 9540220106
E-mail: manglam.publishers@rediffmail.com
Website: www.manglampublications.com

Rs. 1150/-
ISBN 978-93-91193-84-3
9 789391 193843

Perspectives in Higher Education

Dr. Ramesh M.
Dr. Maria Josephine Arokia Marie. S.
Prof. M.T.V. Nagaraju

Perspectives in Higher Education

Editors
Dr. Ramesh M.
Dr. Maria Josephine Arokia Marie. S.
Prof. M.T.V. Nagaraju

MANGLAM

22

उच्च शिक्षा में जीवन कौशल शिक्षा की प्रासंगिकताः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में

–जसमीत कौर[1], डॉ. बुद्ध सिंह[2] एवं अभिषेक कुमार प्रजापति[3]

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय मूल्यों एवं दायित्वों से युक्त ऐसी शिक्षा नीति है, जो इस बदलते विश्व में नागरिकों की भूमिका और उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक बनाने पर बल देती है। इस नीति के मूल में विद्यार्थियों में भारतीय होने का गर्वन केवल उनके विचार में, अपितु व्यवहार, बुद्धि एवं कार्यों के साथ–साथ उनके ज्ञान, कौशल, मूल्यों व सोच में भी होना चाहिए। जो स्थायी विकास, मानवाधिकारों और वैश्विक कल्याण के प्रतिबद्ध हो, जिससे सही मायने में वे विश्व के ज़िम्मेदार नागरिक बन

1 शोध छात्र, यू.जी.सी. नेट, शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉक्टर हरी सिंह गौर विश्विद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश

2 सह–आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, गुरु घासीदास बिलासपुर, विश्विद्यालय, छत्तीसगढ़

3 सहायक आचार्य, यू.जी.सी. नेट, शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉक्टर हरी सिंह गौर विश्विद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश

सकें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य एक बेहतर व्यक्ति का विकास करना है– जो तर्क संगत विचार और कार्य करने में सक्षम हो, जिसमें करुणा और सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन, रचनात्मक कल्पना शक्ति और नैतिक मूल्य हो। नीति का उद्देश्य ऐसे उत्पादक लोगों को तैयार करना है जो भारतीय संविधान द्वारा परिकल्पित समावेशी और बहुलतावादी समाज के निर्माण में बेहतर तरीके से योगदान करें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 20 20 अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में जीवन कौशलय था; प्रभावी सम्प्रेषण, समूह कार्य, निर्णय लेने की क्षमता, रचनात्मक चिंतन, समस्या समाधान के कौशलों के महत्त्व को रेखांकित करती है। यूनिसेफ द्वारा वर्ष 2019 में जारी एक प्रतिवेदन में यह कहा गया है कि वर्ष 2030 में दक्षिण एशिया के आधे से अधिक युवाओं के पास न तो ऐसी शिक्षा होगी नही ऐसा कौशल जिससे वे रोजगार प्राप्त कर सकें। यह आकलन भारत के संबंध में भी गंभीर वास्तविकता को उजागर करता है। जीवन कौशल शिक्षा व्यक्तियों को स्वस्थ एवं उत्पादक जीवन जीने के लिए सीखने, निर्णय लेने एवं जीवन की वास्तविक समस्याओं का समाधान करने योग्य बनाती है। जीवन कौशल युवा लोगों के समग्र कल्याण और क्षमता को बढ़ावा देने में मदद करती हैं। यह कौशल युवाओं को ज्ञान, दृष्टिकोण और मूल्यों का वास्तविक अर्थ समझने में भी सक्षम बनाते हैं– अर्थात क्या करना है? कैसे करना है? इसके अवसर प्रदान करते है। उच्च शिक्षा में कुशल जीवन कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम को बढ़ावा देना देश में युवाओं के लिए एक सम्मान होगा। यह युवाओं को उनके जीवन और उनके सपनों का निर्माण करने के लिए एवं उनको सशक्त बनाने का एक उत्तम तरीका होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षार्थियों के बीच तकनीकी कौशल के साथ जीवन कौशल विकसित करने पर जोर देने के अलावा उनको विशेष रूप से शैक्षिक प्रथाओं में बदलाव लाने के लिए देश की जनशक्ति को सक्षम बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। उच्च शिक्षा प्रणाली में अधिक अनुकूलनशीलता पर जोर देने की आवश्यकता है, जिससे यह आवश्यक कौशल और प्रशिक्षण प्रदान करना जारी रख सकें। इस प्रकार, उच्च शिक्षा के पास हमारे नागरिकों के कौशल विकास में पर्याप्त सुधार के माध्यम से हमारे समाज के भविष्य को प्रभावित करने का एक

महत्त्वपूर्ण अवसर है। यह शोधपत्र भारत में उच्च शिक्षा में जीवन कौशल शिक्षा की प्रासंगिकता से संबंधित है एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2 020 के संबंध में उच्च शिक्षा में जीवन कौशल शिक्षा के महत्त्व के बारे में भी चर्चा करता है, जहां इसे पाठ्यक्रम के माध्यम से प्रदान किया गया है और उच्च शिक्षा में उन्हें एकीकृत करने के लिए विभिन्न सुझाव दिए गए हैं।

मुख्य शब्दः उच्च शिक्षा, जीवन कौशल, जीवन कौशल शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पाठ्यचर्या एकीकरण

परिचय

शिक्षा पूर्वमान व क्षमता को प्राप्त करने, समाज व राष्ट्र के विकास को बढ़ावा देने केलिए मूलभूत आवश्यकता है। उच्च शिक्षा, शिक्षा का वह उचित माध्यम है जिससे देश की समृद्ध प्रतिभा और संसाधनों का सर्वोत्तम विकास और संवर्द्धन व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व की भलाई के लिए किया जा सकता है। यह राष्ट्र की स्थायी आजीविका और आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है। कौशल आधारित शिक्षा के माध्यम से युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020) विद्यार्थियों को शिक्षा, उद्योग एवं व्यवसाय के लिए तैयार व प्रवीण बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। स्नातक और स्नातकोत्तर स्तरों पर आवश्यक तकनीकी और व्यावहारिक कौशल के साथ युवाओं को सशक्त बनाने केलिए उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम को फिर से पुनर्गठित, एकीकृत व निर्मित किया जाएगा। गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालयी या महाविद्यालयी शिक्षा का उद्देश्य अच्छे, संपूर्ण और रचनात्मक नागरिकों का विकास करना होना चाहिए। इसमें व्यक्ति को उसकी रुचि के अनुसार एक या एक से अधिक विशिष्ट क्षेत्रों का अध्ययन करने में सक्षम बनाना है, साथ ही चारित्रिक, नैतिक और संवैधानिक मूल्यों, बौद्धिक उत्सुकता, वैज्ञानिक स्वभाव, रचनात्मकता, सेवा की भावना और 21वीं सदी की क्षमताओं का निर्माण करना चाहिए। विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी, भाषाओं के साथ–साथतकनीकी और व्यावसायिक सम्बन्धी शिल्प आदि विषयों का भी ज्ञान आवश्यक है। जीवन कौशल शिक्षा एक प्रभावशाली शिक्षा प्रणाली है। जिसे व्यवहार पर प्रभाव डालने के लिए सूचना–आधारित

दृष्टिकोणों को व्यवहारिक और पारस्परिक कौशल के साथ जोड़ा जाना चाहिए। जिसे जीवन कौशल के रूप में जाना जाता है। जो व्यक्ति के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन करने के सहायक होता है। जीवन कौशल का उद्देश्य विद्यार्थियों में ज्ञान, दृष्टिकोण और मनोसामाजिक दक्षताओं को विकसित करना है। जो शिक्षार्थियों को स्वस्थ व्यवहार करने, वातावरण और जीवन के गुणों को विकसित करने और उनको बनाए रखने के लिए सकारात्मक क्षमता प्रदान करती है। (बोटविन और ग्रिफिन,2004) जीवन कौशल शिक्षा को (LSE) अटेंशन डेफिसिट हाइपर एक्टिविटी डिसऑर्डर, असामाजिक व्यवहार और नशीली दवाओं के दुरुपयोग के व्यवहार के साथ–साथ एचआईवी की रोकथाम में मदद करने में प्रभावी बताया गया है। इसे अधिकांश देशों के स्कूली शिक्षा पाठ्यक्रम में व्यापक रूप से सम्मिलित किया गया है।(मोश की, हसनज़ादे और तैमूरी, 2014; और यंका और एगल्टन, 2008) जीवन कौशल शिक्षा का लक्ष्य व्यक्तियों को उन कौशलों से लैस करना है, जो उनको पूर्ण और सफल जीवन जीने के लिए आवश्यक है। जीवन कौशल शिक्षा ज्ञान, दृष्टिकोण और मनोसामाजिक दक्षताओं को विकसित करती है। जो शिक्षार्थियों को स्वस्थ व्यवहार करने, वातावरणीय और जीवन जीने के गुणों को विकसित करने और उनको बनाए रखने के लिए सकारात्मक क्षमता प्रदान करती है। जिनकी उन्हें पूर्ण और सफल जीवन जीने के लिए आवश्यकता है। इसे 'जीवन कौशल' के रूप में जाना जाता है, जो व्यवहार में बदलाव को बेहतर एवं प्रभावी बनाने में सहायक होते है। जीवन कौशल शिक्षार्थियों को उत्तम तरीके से स्वयं को जानने और भली भांति समझने में मदद करते हैं, जिससे जीवन में अधिक सचेत रहने के साथ ही व्यक्तिगत संतुष्टि, प्रकृति और अकादमिक रूप से अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सके। विद्यार्थियों को शिक्षा प्रशिक्षण को आत्मसात करने, जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए जीवन कौशल शिक्षा का शिक्षा प्रणाली के साथ ही साथ चलाने की आवश्यकता है। एनईपी 2020 उच्च शिक्षा में जीवन कौशल शिक्षा के महत्त्व को पहचानती है, और इस शिक्षा को व्यापक पाठ्यक्रम में एकीकृत करने का प्रयास कर रही है। इस दृष्टिकोण से यह आशा की जाती है कि विद्यार्थियों को आधुनिक कार्यों में सफल होने और जीवन को पूरा करने के लिए आवश्यक कौशल

विकसित करने में मदद मिलेगी। इस प्रकार, विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में युवाओं के कौशल विकास को बढ़ाना समय की आवश्यक मांग बन गयी है। आज के समय में, विशेष रूप से भारत में, उच्च शिक्षा का भविष्य और प्रासंगिक कौशल विकास घनिष्ठ रूप से सहसंबंधित है। उच्च शिक्षा इसे स्वीकार एवं तदनुसार कार्य करती है, जो देश के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है। कौशल विकास एक अतिरिक्त पाठ्यक्रम नहीं है, इसे विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में जोड़ा जा सकता है, और युवाओं के प्रशिक्षण और शिक्षा में एकीकृत किया जा सकता है, जिससेव भारत में किसी उद्योग, नौकरी या व्यवसाय के संचालन को चलाने केलिए आसानी से रोजगार योग्य और सक्षम हो जाएं। आज प्रत्येक क्षेत्र में नौकरी की तलाश कर रहे युवाओं से सफल जीवन और व्यावहारिक कौशल की आशा की जाती है, जिसके बारे में उसे तब तक कोई जानकारी नहीं होती है, जब तक कि वह एक साक्षात्कार का सामना नहीं करता है। उच्च शिक्षा दुनिया में अपनी पहचान बनाने के इच्छुक युवाओं की कौशल आवश्यकताको पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है। जीवन कौशल विद्यालय या महाविद्यालय और उसके बाद के जीवन में विद्यार्थियों की सफलता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षक कभी–कभी इन कौशलों को "सीखने के लिए सीखना" कौशल के रूप में वर्णित करते हैं, जिसे नियमित गतिविधियों के माध्यम से विकसित किया जा सकता है। भारत एक ज्ञानी समाज और शक्तिशाली अर्थव्यवस्था बनने की ओर बढ़ रहा है साथ ही चौथी औद्योगिक क्रांति की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, रचनात्मक, बहु–विषयक और अत्यधिक कुशल कार्यों के लिए रोजगार के अवसरों के बढ़ते अनुपात की विशेषताओं के अनुसार उच्च शिक्षा प्रणाली को जल्द से जल्द परिवर्तित होना चाहिए। इन आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए उच्च शिक्षा को पुनः समायोजित, पुनः संशोधित और पुनः सक्रिय होना चाहिए।

जीवन कौशल क्या हैं?

मनुष्य अपार संभावनाओं से भरा है। जो अनुकरणीय कार्य करने की हमारी क्षमता में प्रकट होता है; उदाहरण के लिए, अभूत पूर्व वैज्ञानिक समझ, सराहनीय सामाजिक सेवाएं, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट

उपलब्धियां आदि। मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि, हम सभी उत्कृष्टता व प्रवीणता को प्राप्त करने की क्षमता से संपन्न हैं। जीवन कौशल हमारी क्षमता के अहसास और उसके उपयोग में सहायक होते हैं। कभी–कभी, सभीक्षमताओं, लक्ष्यों और दृढ़संकल्पों के साथ भी जीवन में आने वाली बाधाओं के कारण अपने सपनों को साकार करने में असफल हो जाते हैं। वास्तव में, जीवन– कौशल न केवल हमारी क्षमताओं को साकार करने में मदद करते हैं बल्कि, जीवन को एक संघर्षपूर्ण और सार्थक तरीके से जीने में भी मदद करते हैं। सीखने या ज्ञान के माध्यम से प्राप्त आरंभिक कौशल का वर्णन करने के लिए जीवन कौशल का उपयोग किया जाता है। जिसे जीवन कौशल कहा जा सकता है। जीवन कौशल में भावनाएं, धन सम्बन्धी कौशल, विद्यालयी प्रदर्शन, स्वास्थ्य इत्यादि की क्षमताएं भी सम्मिलित हो सकती है। यदि बच्चों में जीवन कौशल का अभ्यास कराया जाता हैं, तो इससे बच्चे के सम्मान, सामाजिक क्षमता और आत्मविश्वास में सुधार हो सकता है।

शब्द 'लाइफस्किल्स' उन कौशलों को संदर्भित करता है, जिसमें आपको जीवन से अधिकतम लाभ उठाने की आवश्यकता होती है। ये कौशल बहुधा जीवन की बेहतर गुणवत्ता के प्रबंधन और जीवन जीने से जुड़े होते हैं। वे हमारी महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा करने और अपनी पूरी क्षमता तक जीवन जीने में हमारी सहायता करते हैं। कोई भी कौशल जो आप के जीवन में उपयोगी हो उसे जीवन कौशल माना जा सकता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने 1993 में जीवन कौशल को "अनुकूली और सकारात्मक व्यवहार की क्षमता के रूप में परिभाषित किया, जो व्यक्तियों को दैनिक जीवन की मांगों और चुनौतियों से प्रभावी ढ़ंग से निपटने में सक्षम बनाता है।

यूनिसेफ जीवन कौशल को परिभाषित करता है– "एक व्यवहार परिवर्तन या व्यवहार विकास दृष्टिकोण जिसे निर्मित किया गया है। जिसमें तीन क्षेत्रों के संतुलन को संबोधित किया गया हैः ज्ञान, दृष्टिकोण और कौशल।" इसलिए जीवन कौशल मनो– सामाजिक और पारस्परिक कौशल का एक बड़ा समूह है, जो लोगों को समुचित निर्णय लेने, प्रभावी ढ़ंग से संवाद करने और साथ ही आत्म–प्रबंधन कौशल विकसित करने में मदद

कर सकता है, जो किसी व्यक्ति के स्वस्थ और उत्पादक जीवन जीने में सहायक होता है। जीवन कौशल बच्चों को एक सीखने का वातावरण प्रदान करते हैं।

जीवन कौशल के प्रकार

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) ने जीवन कौशल को तीन प्रमुख व्यापक क्षेत्रों में वर्गीकृत किया है। ये तीन आरंभिक श्रेणियां एक दूसरे के पूरक श्रेणियां हैंः

1. संज्ञानात्मक कौशल
2. सामाजिक कौशल
3. भावनात्मक कौशल

1. **संज्ञानात्मक कौशल**– संज्ञानात्मक कौशल में आत्म–जागरूकता, महत्त्वपूर्ण विचार, रचनात्मक सोच, समस्या समाधान और निर्णय लेना सम्मिलित है। ये कौशल जीवन के सभी क्षेत्रों जैसे व्यक्तिगत संबंधों, व्यावसायिक सम्बन्धी मुद्दों और सामाजिक समस्याओं का उत्तम ढ़ंग से समाधान करने के लिए आवश्यक हैं। यह सही निर्णय लेने और संघर्षों से बचने के लिए किशोरों को जीवन कौशल की आवश्यकता है। किशोरों को अपने स्वयं के व्यवहार, अपने मित्रों और परिवारजनों के व्यवहार का विश्लेषण करने में भी मदद करता है। मूलरूप से, ये कौशल किसी व्यक्ति के संज्ञान से संबंधित होते हैं।
2. **सामाजिक कौशल**– सामाजिक कौशल में सहानुभूति, पारस्परिक कौशल, संचार कौशल जैसे मौखिक और गैर–मौखिक संचार, सक्रिय श्रवण कौशल और भली–भांति अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की क्षमता सम्मिलित है। सहानुभूति एक महत्त्वपूर्ण कौशल है, जो दूसरों को समझने में मदद करता है। सहयोग, समूह कार्य में सक्रिय भागीदारी, विरोधी विचारों के प्रति सहिष्णुता और दूसरों के प्रति सम्मान भी सामाजिक कौशल में सम्मिलित किये जाते है।
3. **भावनात्मक कौशल**–भावनात्मक कौशल में तनाव से मुक्ति, भावनाओं को नियंत्रित करना, आत्म–प्रबंधन और आंतरिक संघर्षों

को हल करना सम्मिलित किये जाते है। किसी व्यक्ति के आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए इनकी आवश्यकता होती है, ताकि वह अपने जीवन में अपने बल पर बदलाव ला सके। यह कौशल व्यक्ति को तनाव के कारणों और प्रभाव की पहचान करने में सक्षम बनाते है। जिस के लिए वह बहु आयामी रणनीतियों का विकास और उपयोग करते हैं।

आवश्यक जीवन कौशल की कोई सेट या पूरी सूची नहीं है। 1993 में यूनेस्को द्वारा जैक्सडेलर्स की अध्यक्षता में नियुक्त शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय आयोग ने सीखने के चार स्तंभों पर ध्यान केंद्रित किया है जो एक व्यक्ति को बेहतर जीवन केलिए आवश्यक है–

1. **जानने के लिए सीखना (Learning to know)**– संज्ञानात्मक क्षमता, निर्णय लेना, विचार करना, समस्या समाधान कौशल, आदि महत्त्वपूर्ण है।
2. **होने के लिए सीखना (Learning to be)**– व्यक्तिगत क्षमताएं, आंतरिक नियंत्रण को बढ़ाने के कौशल, भावनाओं को प्रबंधित करने के लिए कौशल और तनाव के प्रबंधन के लिए कौशल इत्यादि सम्मिलित है।
3. **करने के लिए सीखना (Learning to do)**–यह एक नए प्रकार के कौशल, बौद्धिक से अधिक व्यावहारिक कौशल की मांग करता है। इसमें सामग्री और प्रौद्योगिकी, मानवीय गुणों और पारस्परिक संबंधों के लिए गौण होते जा रहे हैं।
4. **एक साथ रहने के लिए सीखना (Learning to live together)**–पारस्परिक सहसम्बन्धात्मक कौशल, पारस्परिक संचार कौशल, विचार विमर्श कौशल, जवाबदेही कौशल, सहानुभूति, सहयोग एवं समूह कार्य आदि आते है।

यूनिसेफ के अनुसार जीवन कौशल

यूनिसेफ (1997) व्यापक– जीवन कौशल – ढांचा जीवन कौशल के कई स्तरों को मानता है–

1. बुनियादी या आरंभिक कौशल, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कौशल (सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित)

2. स्थिति–विशिष्ट कौशल (जैसे, बातचीत, मुखरता, संघर्ष, समाधान),
3. व्यावहारिक जीवन कौशल (उदाहरण के लिए, लिंग भूमिकाओं को समझना, जानना या चुनौती देना, नशा आदि के सेवन से इनकार करना)।?

विश्व स्वास्थ्य संगठन और जीवन कौशल

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ), जिनेवा द्वारा 1997 के एक लेख का शीर्षक है "स्कूलों में बच्चों और किशोरों के लिए जीवन कौशल शिक्षा" मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यक्रम, जिसमें दो भाग हैं,

प्रथम भाग–मनोसामाजिक क्षमता के लिए जीवन कौशल का परिचय और द्वितीय भाग; दिशा निर्देश, जीवन कौशल कार्यक्रमों का विकास और कार्यान्वयन।

प्रथम भाग; इसमें दस प्रकार के मूल (सामान्य) जीवन कौशलों की चर्चा की गई है।

इस प्रकार हैं–

1. **आत्म–जागरूकता**–डब्ल्यूएचओ ने इसे परिभाषित किया है, आत्म–जागरूकता में स्वयं की पहचान, चरित्र, ताकत, कमजोरी, इच्छाएं, पसंद और नापसंद सम्मिलित हैं।
2. **सहानुभूति**–इसमें एक दूसरे की भावनाओं को समझने की क्षमता सम्मिलित है। जो उन्हें भावनात्मक रूप से समर्थन प्रदान करने में मदद करता है।
3. **प्रभावी संचार**– प्रभावी संचार एक दूसरों के साथ सामाजिक संबंध स्थापित करने और उसे बनाए रखने केलिए प्रभावी मौखिक और गैर–मौखिक संचार की क्षमता है।
4. **पारस्परिक संबंध**–यह एक महत्त्वपूर्ण जीवन कौशल और मानव बुद्धि का सबसे महत्त्वपूर्ण आयाम है। यह अन्य व्यक्तियों के साथ सकारात्मक संबंधों को शुरू करने और बनाए रखने को प्रोत्साहित करता है। जिससे समाज में संतुलन और विकासके बाधक तत्वों को दूर कर के पारस्परिक संबंधों को स्थापित किया जा सके।

5. **रचनात्मक चिंतन**– यह व्यक्ति को संवेदनशील बना कर नवीन विचारों एवं चिंतन को उत्पन्न करता है जिससे उनमें समझ के साथ कार्यों को करने की क्षमता का विकास होता है। इस प्रकार का चिंतन व्यक्ति को प्रतिदिन के अनुभवों के माध्यम से अच्छा सृजन करने की क्षमता प्रदान करता है।
6. **विवेचनात्मक चिंतन**–इसमें व्यक्ति चिंतन, तर्क और कल्पना एवं निर्णय द्वारा असामान्य किन्तु प्रासंगिक विचारों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता रखते है। यह व्यक्ति की सोच की गुणवत्ता में सुधार करता है, और एक व्यक्ति को तार्किक और निष्पक्ष रूप से जानकारी और अनुभवों का विश्लेषण करने में सक्षम बनाता है।
7. **निर्णयलेना**– यह एक व्यक्ति को सही समय पर सही निर्णय लेने और विभिन्न विकल्पों में से सर्वश्रेष्ठ का चयन करने में मदद करता है। यह विभिन्न विकल्पों के पक्ष और विपक्ष का विश्लेषण और उसके मूल्य को आकने की क्षमता भी प्रदान करता है। जिससे व्यक्ति वास्तविकता का आकलन कर पाता है।
8. **समस्या समाधान**– यह कौशल लक्ष्य को प्राप्त करने एवं उचित मार्ग खोजने का एक प्रयास है। इससे व्यक्ति समस्याओं के कारणों को विश्लेषित करने योग्य बनाता है। ताकि वह समस्याओं के कारणों को समझ कर उसका समाधान करने में सक्षम हो सके।
9. **तदनुभूति**– इस कौशल के माध्यम से व्यक्ति अपनी और दूसरों की भावनाओं को जानने में सक्षम होता है। यह कौश लव्यक्ति को उसकी भावनाओं को व्यक्त करने के स्वस्थ, सकारात्मक और सुरक्षित तरीके जानने में सक्षम बनाता है। तदनुभूति हमें अपने से अलग लोगों को समझने एवं उनको स्वीकार करने में सहायता करती है। यह व्यक्ति की भावनाओं के प्रभाव की पहचान कर उनको उचित रूप से प्रतिक्रिया करने साथ अत्यधिक उत्तेजित करने वाली भावनाओं जैसे; क्रोधव दुःख को नियंत्रित करने के तरीके सीखने में भी सहायता करती है।

10. **तनाव मुक्ति कौशल**—यह कौशल व्यक्ति को तनाव के स्रोत, तनाव के प्रभाव और तनाव को नियंत्रित करने की तकनीक और इसे दूर करने के उपायों की पहचान करने में सक्षम बनाता है।

जीवन कौशल शिक्षा

जीवन कौशल शिक्षा व्यक्तियों के व्यावहारिक कौशल और उनके दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे; संचार, समस्या—समाधान, निर्णय लेना, आत्म—देखभाल, समूह कार्य इत्यादि सामाजिक कौशल को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए आवश्यक दक्षताओं को सिखाने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है। जीवन कौशल शिक्षा एक प्रकार की शिक्षा है, जो व्यक्तियों को दैनिक जीवन जीनव के लिए व्यावहारिक और आवश्यक कौशल सिखाने पर केंद्रित है। जीवन कौशल शिक्षा (LSE) एक शब्द है जिसका प्रयोग बहुधा सीखने के अनुभवों का वर्णन करने के लिए किया जाता है। जिस का उद्देश्य ज्ञान, दृष्टिकोण और मनोसामाजिक दक्षताओं को विकसित करना है। जो शिक्षार्थियों को स्वस्थ व्यवहार करने, वातावरण और जीवन के गुणों को विकसित करने और उनको बनाए रखने के लिए सकारात्मक क्षमता प्रदान करती है। (बोटविन और ग्रिफिन,2004) LSE को अटेंशन डेफिसिट हाइपर एक्टिविटी डिसऑर्डर, असामाजिक व्यवहार और नशीली दवाओं के दुरुपयोग के व्यवहार के साथ—साथ एचआईवी की रोकथाम में मदद करने में प्रभावी बताया गया है। इसे अधिकांश देशों के स्कूली शिक्षा पाठ्यक्रम में व्यापक रूप से समाहित किया गया है (मोशकी, हसनज़ादे, और तैमूरी, 2014; और यंका और एगलटन, 2008)। जीवन कौशल शिक्षा का लक्ष्य व्यक्तियों को उन कौशलों से लैस करना है, जिनकी उन्हें पूर्ण और सफल जीवन जीने के लिए आवश्यकता है।

उच्च शिक्षा में जीवन कौशल शिक्षा का महत्त्व

जीवन कौशल शिक्षा महत्त्वपूर्ण है क्योंकि, यहव्यक्तियों को व्यावहारिक और आवश्यक कौशल विकसित करने में मदद करती है, उन्हें दैनिक जीवन, परिवार, समाज, और कार्यस्थल के प्रति अच्छा आचरण करने की आवश्यकता होती है। भारत की उच्चशिक्षा में जीवन कौशल का महत्त्व

अन्य देशों के समान ही है। भारत के संदर्भ में, कुछ विशिष्ट कारण हैं जो जीवन कौशल शिक्षा को महत्त्वपूर्ण बनाते है। अतः उच्च शिक्षा में जीवन कौशल कई कारणों से महत्त्वपूर्ण है–

1. **समस्या सुलझाने और निर्णय लेने की क्षमता**– यह कौशल एक व्यक्ति को व्यक्तिगत और व्यावसायिक चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाकर एवं उसका प्रबंधन करने में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं।
2. **संचार और पारस्परिक कौशल**– इस कौशल के माध्यम से व्यक्ति आपस में स्वस्थ संबंध बनाने और आगे बनाए रखने के लिए सक्षम होते हैं।
3. **आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता**–यह कौशल समस्याओं को हल करने और नवीन समाधानों के लिए मूल्यवान हैं।
4. **वित्तीय साक्षरता और बजट कौशल**– यह व्यक्तिगत वित्त के प्रबंधन और उपयुक्त वित्तीय निर्णय लेने के लिए आवश्यक हैं।
5. **समय प्रबंधन और स्व–देखभाल कौशल**– यह कौशल जीवन में संतुलन बनाए रखने और तनाव से बचने के लिए महत्त्वपूर्ण है।
6. **व्यवसाय की तैयारी**–जीवन कौशल जैसे समस्या समाधान, रचनात्मक सोच और प्रभावी संचार अत्यधिक महत्त्वपूर्ण कौशल है जो विद्यार्थियों को शिक्षा, नौकरी एवं व्यवसाय में सफलता प्रदान करते हैं।
7. **अनुकूलता**–जीवन कौशल छात्रों को कक्षा के अंदर और बाहर बदलती परिस्थितियों और आने वाली चुनौतियों के अनुकूल कार्य करने में मदद करते हैं।
8. **व्यक्तिगत विकास**–जीवन कौशल शिक्षा छात्रों में आत्म–जागरूकता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भावना विकसित करने में सहायता कर सकती है, जो व्यक्तिगत विकास और कल्याण के लिए महत्त्वपूर्ण है।
9. **प्रभावी शिक्षण**– समय प्रबंधन, संगठन और तनाव प्रबंधन जैसे जीवन कौशल छात्रों को अधिक प्रभावी शिक्षार्थी बनने में मदद

कर सकते हैं, जिससे वे अपने पाठ्यक्रम के भार का प्रबंधन कर सके और अकादमिक रूप से सफल हो सके।

10. **पारस्परिक संबंध**– संघर्ष, समाधान और समूह कार्य जैसे जीवन कौशल छात्रों को उच्च शिक्षा समुदाय में सहपाठियों, प्रशिक्षकों और अन्य लोगों के साथ सकारात्मक संबंध बनाने और आगे बनाए रखने में सहायता कर सकते हैं।
11. **रोजगार क्षमता में सुधार**– नौकरी में बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा को देखते हुए, जीवन कौशल छात्रों की सहभागिता को बढ़ावा दे सकते है। और उन्हें अधिक रोजगारपरक बनने में मदद कर सकत`है।
12. **उद्यमशीलता को बढ़ावा देना**–महत्त्वपूर्ण एवं रचनात्मक सोच, समस्या समाधान और निर्णय लेने जैसे जीवन कौशल छात्रों को सफल उद्यमी बनने में सहायता कर सकते हैं।
13. **मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं को दूर करना**–तनाव प्रबंधन और स्वयं की देखभाल जैसे जीवन कौशल भारत में तेजी से महत्त्वपूर्ण होते जा रहे हैं, क्योंकि आज देश बढ़ते मानसिक स्वास्थ्य संकट से जूझ रहा है।
14. **कौशल अंतराल को पाटना**–जीवन कौशल शिक्षा छात्रों के कौशलों के अंतर को दूर करने और उन्हें आधुनिक कार्य क्षेत्रों की मांगों के अनुरूप तैयार करने में मदद कर सकती है।
15. **व्यावहारिक कौशल का विकास**– जीवन कौशल शिक्षा छात्रों को संचार, समूह कार्य और नेतृत्व जैसे महत्त्वपूर्ण व्यावहारिक कौशल विकसित करने में मदद कर सकती है, जो विद्यार्थियों के लिए अत्यधिक मूल्यवान हैं।

संक्षेपमें, जीवन कौशल शिक्षा भारत में विद्यार्थियों के व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास का समर्थन करने और उन्हें भविष्य में सफलता के लिए तैयार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। जिससे उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों का समग्र विकास किया जा सकता है।

एनईपी 2020 के संदर्भ में उच्च शिक्षा में जीवन कौशल शिक्षा

भारत में नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 उच्च शिक्षा में जीवन कौशल के महत्त्व पर जोर देती है। नीति यह मानती है कि, जीवन कौशल व्यक्तिगत और व्यावसायिक सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण हैं और जीवन कौशल शिक्षा को उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में एकीकृत करने का प्रयास भी करती है। एक गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा को विद्यार्थियों की उपलब्धि, ज्ञान, रचनात्मक, सार्वजनिक जुड़ा व और समाज में उनके योगदान को बढ़ाने में सक्षम होना चाहिए और विद्यार्थियों को सार्थक व संतोषजनक जीवन जीने एवं परिस्थितियों के अनुरूप कार्य भूमिकाओं के लिए तैयार करना चाहिए। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा विश्वविद्यालयी और महाविद्यालयी शिक्षा का अवसर व लक्ष्य होना चाहिए, जिसमे सभी विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा तक पहुंच होनी चाहिए। उच्च शिक्षा में जीवन कौशल शिक्षा के संबंध में एनईपी 2020 में प्रमुख प्रावधान दिए गए हैंः

1. **समग्र शिक्षा की ओर**– एनईपी 2020 समग्र शिक्षा के महत्त्व पर जोर देती है और विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक, शारीरिक और सामाजिक कौशल को विकसित करने का प्रयास करती है।
2. स्नातक स्तर की शिक्षा में शैक्षिक दृष्टिकोण का आकलन जो एसटीईएम के साथ मानविकी और कला को एकीकृत करता है, जिसने लगातार सकारात्मक परिणाम दिखाए हैं, इसमें रचनात्मकता औरनवीनता, संज्ञानात्मक सोच और सोचने की उच्चतम क्षमता, समस्याको सुलझाने की क्षमता, समूहकार्य , संचार कौशल आदि सम्मिलित हैं।
3. समग्र शिक्षा दृष्टिकोण के माध्यम से अनुसंधान में भी सुधार और वृद्धि हुई है। एक व्यापक समग्र कला शिक्षा मनुष्य की सभी क्षमताओं, जैसेः– बौद्धिक, सौंदर्यपरक, सामाजिक, शारीरिक, भावनात्मक और नैतिकआ दि को एक एकीकृत तरीके से विकसित करने की बात कही गयी है।
4. समग्र कला शिक्षा व्यक्तियों को विकसित एवं प्रवीण बनाने में मदद करेगी। जिन विद्यार्थियों के पास कला, मानविकी, भाषा, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और व्यवसायिक तकनीकी और

व्यावसायिक क्षेत्रों में 21 वींसदी की महत्त्वपूर्ण क्षमताएं हैं। उनमें सामाजिक जुड़ाव, व्यावहारिक कौशल, संचार, पारस्परिक संबंध, स्वजागरूकता आदि जीवन कौशलों को विकसित किया जा सकेगा।

5. उच्च शिक्षा में अध्यापन रटकर सीखने के बजाय संचार, चर्चा, बहस, अनुसंधान, और अंतः विषय सोच व समझ के अवसरों पर अधिक जोर देने का प्रयास किया जायेगा।
6. लचीला और अभिनव पाठ्यक्रम, सामुदायिक जुड़ाव, समाजसेवा, पर्यावरणीय शिक्षा एवं मूल्य– आधारित शिक्षा के क्षेत्रों में क्रेडिट–आधारित पाठ्यक्रम और परियोजनाओं की प्रस्तुति पर जोर दिया जाएगा, जिसमें जीवन कौशल भी सम्मिलित होंगे।
7. प्रत्येक उच्च शिक्षा संस्थान में शैक्षिक व्यावसायिक, और व्यक्तिगत परामर्श के साथ–साथ परामर्शदाताओं का प्रावधान होगा जो उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों के तनाव, शारीरिक और भावनात्मक कल्याण में सहायता करेगा।
8. अगले दशक में व्यावसायिक शिक्षा को चरणबद्ध तरीके से सभी शैक्षणिक संस्थानों में एकीकृत किया जाएगा। कौशल अंतर विश्लेषण और स्थानीय अवसरों की मैपिंग के आधार पर लक्षित क्षेत्रों का चयन किया जाएगा, जिससे तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा समग्र शिक्षा के बड़े दृष्टिकोण का हिस्सा बनजाएगी।
9. वैज्ञानिक पद्धति और रचनात्मक सोच पर अधिक जोर देने के साथ खेल और सीखने की खोज– आधारित शैली पर ध्यान देने की बात कही गई है।
10. **कौशल–आधारित शिक्षा नीति कौशल**–आधारित शिक्षा को बढ़ावा देती है और पारंपरिक शैक्षणिक विषयों के साथ–साथ जीवन कौशल शिक्षा को पाठ्यक्रम में एकीकृत करने का प्रयास करती है।
11. प्रौढ़ शिक्षा को लागू करने केलिए नवीन उपायों को अपना कर उससे प्राप्त किए जाने वाले परिणामों की सूची में जीवन कौशलों को सूचीबद्ध किया जाएगा।

12. वयस्क शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम की रूपरेखा में महत्त्वपूर्ण जीवन कौशल (वित्तीय साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, व्यावसायिक कौशल, स्वास्थ्य देखभाल और जागरूकता, बाल देखभाल और शिक्षा, और परिवार कल्याण सहित) सम्मिलित किए जाएंगे।
13. भारतीय कला और संस्कृति को बढ़ावा देने से सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति जैसे कौशल विकसित होंगे। ताकि विद्यार्थियों को पहचान, अपनेपन के साथ–साथ अन्य संस्कृतियों का ज्ञान भी प्राप्त हो सके।
14. उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में प्रौद्योगिकी का उपयोग और एकीकरण के साथ तकनीक को भलीभांति समझने वाले शिक्षकों और उद्यमियों (छात्र उद्यमियों सहित) की रचनात्मकता को बढ़ाने में व शिक्षण की प्रक्रिया में सुधार किया जायेगा।
15. **व्यवसाय की तैयारी**–एनईपी 2020 व्यवसाय की तैयारी के लिए जीवन कौशल के महत्त्व को महत्त्वपूर्ण मानती है और विद्यार्थियों को उन कौशलों से सम्बंधित करने का प्रयास करती है, जिनकी आवश्यकता उन्हें उनके कार्य में सफल होने के लिए होती है।
16. **रोजगार कौशल**– नीति संचार, समूह कार्य और समस्या समाधान जैसे रोजगार परक कौशल विकसित करने के महत्त्व पर प्रकाश डालती है, और इन कौशलों को उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में एकीकृत करने का प्रयास करती है।

एनईपी–2020 उच्च शिक्षा में जीवन कौशल शिक्षा को महत्त्व प्रदान करती है और इस शिक्षा को व्यापक पाठ्यक्रम में एकीकृत करने का प्रया सभी किया जा रहा है। इस दृष्टिकोण से आशा की जाती है कि, विद्यार्थियों को आधुनिक कार्यों में सफल होने और जीवन को सकारात्मक ढंग से जीने केलिए जिन कौशलों की आवश्यकता है, उनको विकसित करने में मदद मिलेगी।

भारत में उच्च शिक्षा में जीवन कौशल शिक्षा पाठ्यक्रम

भारत में उच्च शिक्षा में जीवन कौशल शिक्षा पाठ्यक्रम संस्थान और कार्यक्रम के आधार पर भिन्न–भिन्न होता है। हालांकि, पाठ्यक्रम में बहुधा ऐसे कई विषय और कौशल शामिल होतेहैं, जो विद्यार्थियों के व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास का समर्थन करने के लिए संगठित किए जाते हैं। भारत की उच्च शिक्षा मेंजी वन कौशल शिक्षा पाठ्यक्रम के कुछ सामान्य तत्वों को सम्मिलित किया गया हैः

1. **संचार और पारस्परिक कौशल**– इन कौशलों के माध्यम सेविद्यार्थी प्रभावी संचार, संघर्ष समाधान और समूह कार्य के बारे में सीख सकते हैं।
2. **गहन सोच व समस्या–समाधान कौशल**– इन कौशलों के द्वारा विद्यार्थियों में रचनात्मक सोच, निर्णय लेने और समस्या को सुलझाने की रणनीतियों का विकास किया जा सकता है।
3. **व्यक्तिगत प्रबंधन कौशल**– इसके माध्यम से विद्यार्थियों में समय प्रबंधन, आत्म– देखभाल और तनाव प्रबंधन के बारे में जान सकते है।
4. **वित्तीय साक्षरता कौशल**– विद्यार्थी बजट, निवेश और व्यक्तिगत वित्त के प्रबंधन के बारे में समझ सकते है।
5. **व्यावसायिक चयन में सहायक**–व्यवसाय चयन की योजना, नौकरीकीखोज, रणनीतियां और वृत्तिक सम्बन्ध बनाने के बारे में जान सकते है।

भारत में उच्च शिक्षा में जीवन कौशल शिक्षा के पाठ्यक्रम को विद्यार्थियों के समग्र विकास का समर्थन करने और उन्हें आधुनिक कार्यों में सफलता केलिए तैयार करने केलिए पुनर्गठित एवं निर्मित किया गया है। जीवन कौशल पाठ्यक्रम को एक पृथक पाठ्यक्रम के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है, या अध्ययन के अन्य पाठ्यक्रमों और कार्यक्रमों में एकीकृत किया जा सकता है।

उच्च शिक्षा में जीवन कौशल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकारी पहल

भारत सरकार ने उच्च शिक्षा में जीवन कौशल शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कई पहल और योजनाएं शुरू की हैं। इस क्षेत्र की कुछ प्रमुख सरकारी योजनाओं में सम्मिलित हैं:

1. **कौशल भारत**– यह भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया एक प्रमुख कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों और कार्य में सलंग्न नागरिकों को कौशल–आधारित प्रशिक्षण और शिक्षा प्रदान करना है। इन कार्यक्रम में जीवन कौशल शिक्षा पर एक घटक सम्मिलितहै, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यावहारिक कौशलों को विकसित करना और उन्हें आधुनिक कार्यों की मांगों के अनुरूप तैयार करना है।
2. **राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC)**–NSDC एक सार्वजनिक–निजी भागीदारी है, जिसका उद्देश्य भारत में कौशल–आधारित शिक्षा और प्रशिक्षण को बढ़ावा देना है। संचार, रचनात्मक सोच और समस्या समाधान सहित कौशलों को विद्यार्थियों के जीवन में विकसित करने के उद्देश्य से कार्यक्रमों और पाठ्यक्रमों की प्रस्तुति करता है।
3. **स्वच्छ भारत अभियान**– यह भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया एक राष्ट्र व्यापी अभियान है, जिसका उद्देश्य सार्वजनिक स्थानों पर स्वच्छता और स्वच्छता को बढ़ावा देना है। अभियान में जीवन कौशल शिक्षा पर एक घटक सम्मिलित है, जो विद्यार्थियों के पारस्परिक और संचार कौशल के साथ–साथ उनकी नागरिक होने की जिम्मेदारी की भावना को विकसित करना है।
4. **राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस)**– एनएसएस एक स्वैच्छिक सेवा कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों के माध्य सामाजिक और सामुदायिक सेवा को बढ़ावा देना है। कार्यक्रम में जीवन कौशल शिक्षा पर एक घटक सम्मिलित है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों के नेतृत्व और समूह कार्य कौशल के साथ– साथ एक जिम्मेदार नागरिक होने की भावना विकसित करना है।

भारत में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने जीवन कौशल शिक्षा के महत्त्व को पहचाना है, और उच्चशिक्षा पाठ्यक्रम में जीवन कौशल शिक्षा को बढ़ावा देने और एकीकृत करने के लिए कई कदम उठाए हैं।

जीवन कौशल शिक्षा के संबंध में यूजीसी द्वारा की गई कुछ प्रमुख पहलों में सम्मिलित हैंः

भारत में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए एक जीवन कौशल शिक्षा मॉड्यूल विकसित किया है। मॉड्यूल उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में जीवन कौशल शिक्षा को सम्मिलित करने के लिए दिशा निर्देश और संसाधन प्रदान करता है।

यू०जी०सी० जीवन कौशल शिक्षा मॉड्यूल में निम्नलिखित घटक समाहित हैंः

1. **जीवन कौशल की परिभाषा और अवधारणा**—मॉड्यूल जीवन कौशल की व्यापक परिभाषा और व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास में उनके महत्त्व को दर्शाता है।
2. **पाठ्यचर्या की रूप रेखा**— मॉड्यूल, उच्च शिक्षा में जीवन कौशल शिक्षा पाठ्यक्रम को निर्मित और कार्यान्वित करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है।
3. **शिक्षण और सीखने की रणनीतियाँ**— मॉड्यूल, कक्षा में जीवन कौशल शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रभावी शिक्षण और सीखने की रणनीतियों पर मार्ग दर्शन प्रदान करता है।
4. **मूल्यांकन और मूल्यांकन**—मॉड्यूल, विद्यार्थियों के सीखने और जीवन कौशल शिक्षा में प्रगति के मूल्यांकन और मूल्यांकन के लिए दिशा निर्देश प्रदान करता है।
5. **संकाय विकास**— मॉड्यूल, प्रशिक्षणऔर व्यावसायिक विकास के अवसरों सहित संकाय विकास के लिए संसाधन और सहायता प्रदान करता है।
6. **अनुसंधान और मूल्यांकन**—यू०जी०सी० ने उच्च शिक्षा में जीवन कौशल शिक्षा के प्रभाव को समझने और सर्वोत्तम प्रभावों की पहचान करने के उद्देश्य से अनुसंधान और मूल्यांकन पहलों का समर्थन किया है।

7. **छात्र जुड़ाव**–यूजीसी ने विश्वविद्यालयों को प्रोत्साहित किया है कि, वे विद्यार्थियों को अतिरिक्त गतिविधियों, इंटर्नशिप, और उच्च शिक्षा में अन्य अनुभवात्मक रूप से सीखने के साथ उनको जीवन कौशल के विकास के माध्यम से जीवन कौशल शिक्षा से जुड़ने के अवसर प्रदान करें।

संक्षेपमें, भारत सरकार ने इन सभी योजनाओं को शुरू किया हैं, जैसा कि ऊपर वर्णित है, जिसका उद्देश्य पाठ्यक्रम में जीवन कौशल शिक्षा के विकास और एकीकरण के माध्यम से जीवन कौशल शिक्षा को बढ़ावा देना है। जीवन कौशल शिक्षा विद्यार्थियों को उनके व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में अधिक रोजगार परक और सफल बनाने में मदद करेगी

उच्च शिक्षा में जीवन कौशल शिक्षा को लागू करने की चुनौतियाँ

जीवन कौशल शिक्षा को प्रभावित करने वाली चुनौतियों में संसाधनों की कमी, अपर्याप्त शिक्षक, शिक्षार्थी प्रशिक्षण, परिवार के समर्थन की समस्याएं, साक्षरता, जीवन कौशल लक्ष्यों कोपूराकरने की दोहरी जिम्मेदारी और सांस्कृतिक संवेदनशीलता का प्रबंधन आदि सम्मिलित हैं। इनके अलावा, यह समस्या लिंग संबंधी मुद्दों से जटिल है, जिसमें किशोर लड़कियों (लड़कों की तुलना में) में सहभागिता की कमी, सांस्कृतिक बाधाएं और सामाजिक मानदंड सम्मिलित हैं जो छात्राओं की शिक्षा तक पहुंच को सीमित करते हैं, कुछ अन्य चुनौतियाँ इस प्रकार हैंः

1. **विद्यार्थियों पर अकादमिक बोझ**–उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों पर अकादमिक विषयों और पाठ्यक्रम की अन्य सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों का बोझ होता है। जिसके लिए उन्हें मात्र ग्रेड अर्जित करना होता है।
2. **विद्यार्थियों की गैर–भागीदारी**– शिक्षार्थी जीवन कौशल शिक्षा की कक्षाओं में भाग लेते हैं लेकिन इसमें संचालित गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग नहीं लेते हैं, अंत में मूल्यांकन से बचते हैं क्योंकि उन्होंने सक्रिय रूप से भाग नहीं लिया था।

3. **माता–पिता द्वारा अस्वीकृति**– अधिकांश माता–पिता अपने बच्चों के शैक्षणिक विषयों को पहली वरीयता देते हैं, और उनका मत है कि जीवन कौशल बाद के जीवन में सीखा जा सकता है। उनमें से अधिकांश जीवन कौशल शिक्षा (एल०एस०ई०) को समय की बर्बादी मानते है।
4. **शिक्षकों को सेवा पूर्व प्रशिक्षण नहीं**–सेवा पूर्व शिक्षा के दौरान उच्च शिक्षा प्रणाली में जीवन कौशल शिक्षा के कार्यान्वयन के संबंध में शिक्षकों को कोई प्रशिक्षण नहीं दिया गया।
5. **सेवाकालीन प्रशिक्षण की अल्प अवधि**–जीवन कौशल शिक्षण और मूल्यांकन के विभिन्न पहलुओं पर शिक्षकों में गहन प्रशिक्षण की कमी है। जिससे उच्च शिक्षा संस्थानों में एलएसई के सफल कार्यान्वयन के लिए शिक्षकों की तैयारी का स्तर निम्न है।
6. **शैक्षणिक विषयों के साथ जीवन कौशल शिक्षा के (एलएसई) को आत्मसात करने के लिए कोई प्रशिक्षण नहीं**–जीवन कौशल पाठ्यक्रम के लिए नियमित सेवाकालीन प्रशिक्षण सभी शिक्षकों को उनके शैक्षणिक विषय के साथ एलएसई को आत्मसात करने के लिए प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।
7. **जीवन कौशल शिक्षा (एलएसई) पृथक पाठ्यक्रम के रूप में**– एलएसई कार्यक्रम सभी उच्च शिक्षा संस्थानों में पृथक पाठ्यक्रम कक्षा गतिविधि के रूप में चल रहा है, जिसमें शिक्षक एलएसई को शैक्षणिक पाठ्यक्रम के साथ आत्मसात करने के लिए उन्मुख नहीं है।
8. **संसाधनों की कमी**–जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रम में संचालित गति विधियाँ अत्यधिक संसाधन की मांग करती हैं साथ ही कुशल शिक्षकों की आवश्यकता होती है। लेकिन, उच्च शिक्षा संस्थानों में एलएसई के प्रभावी वितरण के लिए शिक्षण और सीखने के संसाधनों और सहायक सामग्रियों की अपर्याप्तता एक आम चुनौती बन के हमारे समक्ष प्रस्तुत है।
9. **एलएसई का मूल्यांकन**–जीवन कौशल या दक्षताओं को मापने के लिए अधिकांश उपस्थित प्रणालियां अत्यधिक जटिल, समय

लेने वाली है, जिसमें कुशल अंतर्दृष्टि व समझ की आवश्यकता है। परंतु शिक्षकों को एलएसई के मूल्यांकन के लिए प्रशिक्षित नहीं किया गया है।

निष्कर्ष

एनईपी 2020 युवाओं की तेजी से बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से शैक्षिक परिस्थितियों के पुनर्गठन की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। एनईपी का अपना दृष्टिकोण युवाओं को प्रशिक्षण और शिक्षा के विभिन्न चरणों में प्रदान किए गए व्यावसायिक, रोजगार परक और उद्यमशीलता कौशल के माध्यम से सशक्त बनाना है। उच्च शिक्षा का उद्देश्य एक प्रबुद्ध, सामाजिक रूप से जागरूक, जानकार और कुशल राष्ट्र के विकास को सक्षम बनाना होना चाहिए। जो युवाओं का उत्थान कर सके। जिससे वह समस्याओं के मजबूत समाधान का निर्माण और कार्यान्वयन कर सके। दुनिया बहुत तेजी से बदल रही है। इन बदलती हुई स्थिति की पृष्ठभूमि मां शिक्षा की भूमिका को नए सिरे से निर्मित और पुनर्गठित करना होगा। सामाजिक अपेक्षाओं के साथ तालमेल बिठाने और प्रदर्शन में वांछित गुणवत्ता बनाए रखने के लिए, शिक्षक को परिवर्तन के एक शक्तिशाली कार्यकर्त्ता के रूप में कार्य करना होगा। गुणवत्तापूर्ण उ च्च शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत रोजगार के लिए अधिक अवसर पैदा करने से कहीं अधिक है; यह अधिक जीवंत, सामाजिक रूप से स्वस्थ सामाजिक संबंधों, खुशहाल व एक जुटता, सुसंस्कृत, उत्पादक, अभिनव, प्रगतिशील और समृद्ध राष्ट्र की कुंजी का प्रतिनिधित्व करता है। वह दिन दूर नहीं जब भारतीय जीवन कौशल शिक्षा को विद्यार्थियों में एक प्रभावी, सकारात्मक सामाजिक और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए मनोसामाजिकरण नीति के रूप में स्वीकार करेंगे। जीवन कौशल शिक्षा को प्रशिक्षक, शिक्षक, या परामर्शदाता द्वारा नियमित विद्यालयी पाठ्यक्रम में एकीकृत करना और निरंतर आधार पर प्रदान करना चाहिए। यह निष्कर्ष निकालना संभव है कि, जीवन कौशल शिक्षा विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए आवश्यक है। साथ ही जीवन कौशल छात्रों के व्यक्तिगत और सामाजिक विकास का एक महत्त्वपूर्ण घटक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

Botvin, G.J. & Griffin, K.W. (2004). Life Skills Training: Empirical Findings and Future Directions. The Journal of Primary Prevention, 25 (2). Retrieved from https://www.researchgate.net/profile/GilbertBotvin/publication/226086316_ Life_ Skills_ Training_ Empirical_ Findings _and _Future_Directions/links/02bfe5144a 7a6b238f000000/Life-Skills-Training-Empirical-Findings-and-PDF

Kawalekar, J.S. (2017). The Value of Life Skills in Higher Education. IOSR Journal of Research & Method in Education, 7(3), 43-46. Retrieved from https://iosrjournals.org/iosr-jrme/papers/Vol-7%20Issue-3/Version-5/H0703054346.pdf

Moshki, M., Hassanzade, T. & Taymoori, P. (2014). Effect of Life Skills Training on Drug Abuse Preventive Behaviors among University Students. International journal of preventive medicine. 5. 577-83.

डेलर्स, जे. (2010). लर्निंग द ट्रेजर विथ इनः रिपोर्ट टू यूनेस्को ऑफ द इंटरनेशनल कमिशन ऑन एडुकेशन फ़ॉर द ट्वेंटी फर्स्टसेंचुरी. यूनेस्कोपब्लिशिंग-Retrieved from https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000109590? posInSet=12&queryId=f9897ad1-e31b-4acf-a2d8- e64997ad28ab

प्रजापति (2017). सिग्निफिकेन्स ऑफ लाइफस्किल एजुकेशन, कंटेम्पररी इश्यूज इन इंडिया, 1(10), 1–6.

यंकाह, ई. – एग्लटन, पी. (2008). इफेक्ट्स एंड इफेक्टिवनेस ऑफ लाइफ स्किल्स एडुकेशन फ़ॉर एच्.आई.वी.प्रीवेंशन इन यंग पीपल. एड्स एडुकेशन एंडप्री वेंशन,अंक, 6(20), पृष्ठसंख्या– 485-465. DOI: https://doi.org/10.1521/aeap.2008.20.6.465

यूनाइटेड नेशन्स आफिस ऑन ड्रग्स क्राइम (द.क.). मॉड्यूल फॉर लाइफ स्किल्स. Retrieved from https://www.unodc.org/pdf/youthnet/action/message/escap_peers_07.pdf

यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन (2019). करिकुलम फॉर लाइफ स्किल्स. Retrieved fromhttps://www.ugc.ac.in/e-book/SKILL%20 ENG.pdf

यूनिसेफ कॉम्प्रिहेंसिव (n.d). लाइफ– स्किल्स फ्रेमवर्क.

Retrieved fromhttps://www.unicef.org/india/sites/unicef.org.india/files/2020-02/Comprehensive-lifeskills-framework.pdf

राष्ट्रीयसेवायोजना (n.d). भारत सरकार- Retrieved fromhttps://nss.gov.in/

विश्व स्वास्थ्य संघटन (1994). लाइफस्किल्स एजुकेशन फॉर चिल्ड्रेन एंड एडल्ट्स इन स्कूल. प्रोग्राम ऑनमेन्टल हेल्थ. जिनेवा.

वृंदा, एम.एन. – राव, एम.सी. (2011). लाइफ स्किल एडुकेशन फ़ॉर यंग अडोलसेंट्स. जर्नल ऑफ इंडियन एकडेमी ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी, अंक, 37, पृष्ठसंख्या– 9–15.

शिक्षा मंत्रालय (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार.

सिंह, निवेदिता (2016). लाइफस्किल्स एजुकेशनः नीड्स एंड स्ट्रैटिजीस. स्कॉलरली रिसर्च जर्नल फ़ॉर ह्यूमैनिटीः साइंसेज – इग्लिशलैंग्वेज, अंक 16(3), पृष्ट संख्या– 3806–3800.

स्वच्छ भारत – स्वच्छ भारत अभियान (n.d). भारत एक राष्ट्रव्यापी अभियान है. स्वच्छ भारत चैलेंज-Retrieved from https://swachhbharat.mygov.in/